दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांकः 28.01.2023

प्रकाशनार्थ

नैक मूल्यांकन उच्च शिक्षण संस्थानों के उत्कृष्टता के आकलन की पारदर्शी एवं निष्पक्ष प्रक्रिया है –डॉ. पवन कुमार पाण्डेय

दिनांक 28.01.2023 गोरखपुर। महाविद्यालय के गोरखनाथ साहित्यिक केंद्र में नैक मूल्यांकन पर आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला में डॉ. पवन कुमार पाण्डेय, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग ने 'राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन' विषय पर बोलते हुए कहा की नैक मूल्यांकन आज उच्च शिक्षण संस्थानों के उत्कृष्टता के अवलोकन की पारदर्शी एवं निष्पक्ष प्रक्रिया है। डॉ. पाण्डेय ने नैक से संबंधित निम्नांकित बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कीः

नैक मूल्यांकन क्या है और यह क्यों आवश्यक है?

राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) एक ऐसा संगठन है जो भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों का आकलन कर मान्यता देता है। यह भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वित्तपोषित एक स्वायत्त निकाय है जिसका मुख्यालय बैंगलोर में है। नैक यूजीसी का एक हिस्सा है जिसका काम देशभर के विश्वविद्यालयों, उच्च शिक्षण संस्थानों, निजी संस्थानों में गुणवत्ता को परखना और उनको रेटिंग देना है। यूजीसी की नई गाइडलाइन के तहत सभी उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए नेशनल असेसमेंट एंड एक्रेडिएशन काउंसिल से मान्यता प्राप्त करना जरूरी है। अगर किसी संस्थान ने इसकी मान्यता नहीं ली है तो उसे किसी भी सरकारी योजना का लाभ नहीं मिलेगा।

'नैक का उद्देश्य क्या है'

1. उच्चतर शैक्षिक संस्थानों या उनकी इकाइयों, अथवा विशिष्ट शैक्षणिक कार्यक्रमों या परियोजनाओं के आवधिक मूल्यांकन एवं प्रत्ययन की व्यवस्था करना।

2. उच्चतर शिक्षण संस्थानों में शिक्षण–अधिगम तथा अनुसंधानको बढ़ावा देने के लिए शैक्षणिक परिवेश को प्रोत्साहित करना।

3. उच्चतर शिक्षा में स्व–मूल्यांकन, जवाबदेही, स्वायत्तता और नवाचार को प्रोत्साहित करना।

4. गुणवत्ता से संबंधित अनुसंधान अध्ययन, परामर्श और प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करना।

5. गुणवत्ता मूल्यांकन, संवर्धन और संपोषण के लिए उच्चतर शिक्षा के अन्य हितधारकों को सहयोग प्रदान करना।

नैक मूल्यांकन का आधार-

नैक ने उच्चतर शिक्षा संस्थानों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभाजित किया है (विश्वविद्यालय, स्वायत्त महाविद्यालय और संबद्ध/संगठित महाविद्यालय) तथा इन तीन प्रकार के उच्चतर शिक्षण संस्थानों की कार्य–पद्धति और संगठनात्मक लक्ष्य पर आधारित मानदण्डों के तहत विभिन्न प्रकार के अधिभार निर्दिष्ट किए गए हैं।

नैक ने मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के आधार के रूप में 7 मानदण्डों पाठ्यक्रम के पहलू, अध्ययन–अध्यापन तथा मूल्यांकन, शोध, नवोन्मेष तथा विस्तार, मूलभूत सुविधाएँ एवं अध्ययन के संसाधन, छात्र सहयोग तथा विकास, संचालन, नेतृत्व एवं प्रबंधन और संस्थानिक मूल्य और सर्वश्रेष्ठ परम्पराएँ को एक ढाँचे में चिन्हित किया है ।

कैसे मिलता है नैक प्रत्यायन-

नैक निकाय ने प्रत्यायन के लिए आवेदन करने के लिए संस्थानों के लिए पात्रता मानदंड तय किया है। जिसमें मुख्य रूप से संस्था के स्तर पर आंतरिक गुणवत्ता एवं सुनिश्चियन प्रकोष्ठ क्रियाशील होना चाहिए और वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट (ए.क्यू.ए.आर) की वार्षिक प्रस्तुति समय–समय पर 5 सत्रों की होनी चाहिए।

इसके उपरांत जब संस्थानों को ये लगे की अब उनकी संस्था नैक परीक्षण के लिए तैयार है तो वो प्रारंभिक गुणवत्ता मूल्यांकन (IIQA) के लिए संस्थान के डेटा को संकलित कर जमा करें। IIQA स्वीकृत होने के बाद संस्थानों को स्व–अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इस स्व–अध्ययन रिपोर्ट में संस्थान द्वारा सात मानदंडों के आधार पर संस्थाएं अपनी संस्था से संबंधित मात्रात्मक एवं गुणात्मक सूचनाएं भेजती हैं। जिसमें 75 प्रतिशत मात्रात्मक सूचनाओं का मूल्यांकन प्रस्तुत प्रमाणपत्रों के आधार पर होता है इसमें छात्र संतुष्टि सर्वेक्षण का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसके उपरांत 25 प्रतिशत गुणात्मक सूचनाओं के मूल्यांकन हेतु नैक द्वारा गठित टीम संस्था का भौतिक निरीक्षण कर मूल्यांकन कर अंतिम ग्रेड देती है।

कैसे जारी होता है नैक मूल्यांकन का परिणाम-

मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के अन्तिम परिणाम गुणात्मक तथा मात्रात्मक दशांश मूल्यांकन के आधार पर तैयार होता है। इसे तीन भागों वाले दस्तावेज के रूप में संकलित किया जाता है।

1. समकक्ष परिक्षण टीम की रिपोर्ट-

प्रथम खण्डः– संस्थान की सामान्य जानकारी और सन्दर्भ देता है।

द्वितीय खण्डः– गुणात्मक संकेतों के अधार पर समकक्ष परीक्षण के आधार पर मापदण्ड के अनुसार विश्लेषण होता है। पीयर टीम के द्वारा उच्च शिक्षा संस्थान की विशेषताओं एवं कमियों को प्रत्येक मापदण्ड के आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण करनेवाली गुणात्मक तथा वर्णनात्मक मूल्यांकन रिपोर्ट होती है।

तृतीय खण्डः– संस्थान की विशेषताओं, कमियों, अवसरों और चुनौतियों को जोड़कर सम्पूर्ण मूल्यांकन को प्रस्तुत करता है।

चतुर्थ खण्डः– संस्थान की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए दी गई अनुसंशाएँ अभिलेखित करता है ।

2. मात्रात्मक दशांश पर आधारित रेखा-चित्रात्मक प्रतिनिधित्व-

यह भाग नैक के गुणवत्ता सूचक ढाँचा के मात्रात्मक संकेतों पर आधारित सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से उच्चतर शिक्षा संस्थान का तंत्र–जनित गुणात्मक रूपरेखा को दर्शाता है। मात्रात्मक संकेतकों के संश्लेषण के माध्यम से संस्थान की विशेषताएँ रेखा–चित्रों को रूप में प्रतिम्बिबित की जाती हैं।

3. संस्थानगत श्रेणी फलक-

गुणवत्ता संकेतों, मात्रात्मक संकेतों और छात्र समाधान सर्वे पर आधारित संस्थानगत श्रेणी का मूल्यांकन मौजूदा आंकलन विधि का प्रयोग करते हुए सॉफ्टवेयर द्वारा किया जाता है।।

उक्त तीन भागों से मिलाकर "नैक प्रत्यायन परिणाम" तैयार किया जाता है ।

संस्थानिक सीजीपीए की-

परिवर्तन सीमा	**अक्षर श्रेणी**	**स्थिति**
3.51 – 4.00	ए	प्रत्यायित
3.26 – 3.50	ए	प्रत्यायित
3.01 – 3.25	ए	प्रत्यायित
2.76 – 3.00	बी	प्रत्यायित
2.51 – 2.75	बी	प्रत्यायित
2.01 – 2.50	बी	प्रत्यायित
1.51 – 2.00	सी	प्रत्यायित
< = 1.50	डी	अप्रत्यायित

कार्यशाला के अंत में डॉ. पाण्डेय ने कहा कि सभी संस्थाएं पाठ्यक्रम , अध्ययन–अध्यापन तथा मूल्यांकन, शोध, नवाचार तथा विस्तार, मूलभूत सुविधाएँ एवं अध्ययन के संसाधन, छात्र सहयोग तथा विकास, संचालन, नेतृत्व एवं प्रबंधन और संस्थानिक मूल्य और सर्वश्रेष्ठ परंपराओं पर कार्य तो करती हैं। परंतु मूल्यांकन के दौरान संस्थाएं अपना पक्ष प्रमाणित ढंग से नहीं रख पाती हैं और इसी कारण से उन्हें बेहतर ग्रेड प्राप्त नहीं हो पाता है। इसीलिए संस्थाओं को उपर्युक्त पहलुओं पर कार्य करने के साथ ही उसकी प्रमाणिकता का संकलन भी आवश्यक है। कुछ लोग नैक प्रक्रिया को जाने बगैर ही अपना मत प्रकट करते हैं और इस पारदर्शी प्रक्रिया पर सवाल उठाते हैं जो उचित नहीं हैं।

इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन डॉ. हरीशंकर गुप्ता ने किया एवं इस अवसर महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ.) शैलेश कुमार सिंह
मीडिया प्रभारी